[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3218

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

सामाजिक समस्याएँ व पर्यावरण

बी.एस.जाधव
म.पु.रा.प. शा .कन्या. महाविद्यालय देवास

प्रस्तावना

आदिम काल से लेकर वर्तमान आधुनिक युग तक मनुष्य ने उन्नति व प्रगतिव के अनेक सोपान तय किए है। मनुष्य ने बुद्धि के विकास के साथ –साथ प्रगति की है। मानव ने प्रकृति प्रदत्त साधनों का दोहन कर अपना विकास किया है, किन्तु विकास की इस अन्धी दौड़ में मनुष्य ने प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का अविवेकपुर्ण दोहन ने प्रकृति व पर्यावरण को अत्यंत क्षति पहुचॉई है। मनुष्य की निरन्तर बढ़ती आवश्यकताओं ने पर्यावरण को क्षति पहुचाई है, जिसमें प्राकृतिक असुतंलन को जन्म दिया। इस असंतुलन ने मानव के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न कर दिए है

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध आलेख विवरणात्मक शोध पर आधरित है। उक्त शोध हेतु आवश्यक द्वितीयक समंक विभिन्न पुस्तकों, जर्नल्स एवं शोध प्रबंध से लिए गए है। शोध निष्कर्ष प्राप्त करन हेतु तुलनात्मक व परिमावात्मक विधि को प्रयोग किया गया है।

समाजिक विकास व पर्यावरण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, एंव समाज के बिना मानव का कोई अस्तित्व नही है। समाजा मनुष्य को उचित वातावरण व पर्यावरण में रहने का अधिकार प्रदान करता है, किन्तु विकास के अन्धानुकरण ने समाज को पर्यावरण जागरूकता से विमुख कर दिया । मनुष्य अपनी भौतिक सुविधा के लिए पर्यावरण को निरन्तर क्षति पहुॅचा रहा है। इस कारण मनुष्य भौतिक रूप से तो सम्पन्न हो रहा है। किन्तु उसने पर्यावरण को उपेक्षित कर दिया है। इस उपेक्षा ने अनेक सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है, वे प्रमुख इस प्रकार है–

उर्जा की समस्या

मनुष्य प्रारंभ से आधुनिक युग उर्जा हेतु लकड़ी व कोयले पर निर्भर रहा है, किन्तु अत्याधिक दोहन ने इन संसाधनों की मात्रा मे भारी कमी की है। जिससें उर्जा सकंट उपस्थित हो गया है।

जलवायु परिवर्तन

पर्यावरण को हो रही क्षति ने जलवायु परिवर्तन की समस्या को जन्म दिया है। समय पर बारिश न होना, शरद ऋतु, ग्रीष्म ऋतु का देर से आना आदि समस्याऐ उत्पन्न हुई है, जिससें भुकम्प अतिवृष्टि, विषाणु जीवाणु जनित रोग आदि से मनुष्य का निरन्तर सामना हो रहा है।

भूमण्डलीय तापन

जलवायु परिवर्तन से धरती निरन्तर गर्म हो रही है। विश्व अवलोकन संस्थान के 1992 के प्रतिवेदन के अनुसार 1990 का वर्ष सबसे गर्म वर्ष रहा । भूमण्डलीय तापन मे वृद्धि की प्रमुख वजह हरित गैसों कार्बन मोनो

आक्साइड, फ्लोरो–कार्बन, मीथेन, आदि का वृद्ध मांगो में उत्सर्जन है, जिससे आजोन को क्षति पहुॅच रही है और मिटटी उर्वरता में कमी, त्वचा रोग, जैव विविधता का नाश आदि गंभीर समस्याएॅ उत्पन्न हो रही है।

हिम का पिघलना

जलवायु परिवर्तन से विश्व के वृद्ध–ग्लेशियर निरन्तर पिद्यल रहे है, जिससे समुद्र व नदियों का जलस्तर निरन्तर बढ़ रहा है, जिससे जल प्लवन, बाढ़ आदि भंयकर खतरे मानव समाज के समक्ष उत्पन्न हो रहे है।

अम्लीय वर्षा

वाहनों, उद्योगो, कारखानों से निकलने वाली कार्बनडाई आक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड, नाइट्रिक वातावरण में मिलकर, वर्षा के रूप में प्रथ्वी पर आती है। वर्षा का यह जल जब प्रथ्वी पर आता है तो मृदा व पेय–जल को गंभीर रूप से प्रदुषित करता है।

उपरोक्त अनेक पर्यावरणी समस्याओं ने मानव समाज को क्षति पहुॅचा रहे है। विश्व के अनेक देश इन समस्याओं के प्रति गंभीर हुए है,एवं पर्यावरण को अनुकूल बनाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे है। भारत में पर्यावरण को अनुकूल बनाए रखने के लिए अनेक अधिनियम बनाए गए जिनमें प्रमुख है–

1. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1986
2. वन अधिनियम 1980
3. जल व वायु संरक्षण अधिनियम 1981

पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव

1. उद्योगों पर नियंत्रण करना तथा उनके सख्त पर्यावरणीय मानक निर्धारित करना
2. लोगो को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना।
3. पर्यावरण संरक्षण लोगो की नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी बनाना, जैसे –पोलीथीन का कम प्रयोग, वाहनों का न्युनतम उपयोग,जल अपव्यय न करना, नियमित वृक्षारोपण करना
4. नदियों को स्वच्छ करना व उसमें होने वाले प्रदुषणों को नियंत्रित करना।
5. पर्यावरण को क्षति पहुचाने वाले उत्पादकों जैसे प्लास्टिक उपयोग पोलीथीन कार्बनमोनो आक्साइड छोड़ने वाले विविध घरेलू उपकरण वाहन आदि का उपयोग कम करना चाहिए।
6. वस्तुओं के पुनः उपयोग की आदत डालनी चाहिए
7. जल,विद्युत का अपव्यय रोकना चाहिए।
8. वर्षा के जल को संचित करने की व्यवस्था करनी चाहिए।
9. विकास की दौड़ पर्यावरणीय हितों की बली नही चढ़ानी चाहिए।
10. भावी पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति जागरूक करनी चाहिए।

इस प्रकार अनेंक विधियों से हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है। कि मानव निंरतंर पर्यावरण को हानि पहुचॉ रहा है। जिसके गंभीर परिणाम भी उसके समक्ष उपस्थित हो रहे है। पर्यावरण के संरक्षण की कवायद तो शुरू हो गई है। मनुष्य को धारणीय विकास की परिकल्पना को स्वीकार करना होगा। विकास व पर्यावरण दोनो पक्षों पर पर्याप्त ध्यान देना होगा। मनुष्य विकास हेतू प्रकृति का उपयोग विवके पूर्ण ढंग से करे तो निश्चित ही पर्यावरण को क्षति पहुचॉए बिना विकास के निर्धारित लक्ष्य का प्राप्त कर सकता है।हमें पृथ्वी से उतना ही लेना चाहिए जितना की हम लोटा सकें।

संदर्भ

1. सक्सेना व मोहन, पर्यावरण अध्ययन् कैलाश पुस्तक सदन्, पेज– 142–178
2. शुक्ला सशि व तिवारी एन.के., पर्यावरण अध्ययन्, रामप्रसाद एण्ड संस, पेज – 168–220
3. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1986
4. वन अधिनियम 1980
5. जल व वायु संरक्षण अधिनियम 1981